वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २५ जनवरी - २०२५ प्रकाशन - ०१

Holistic Living Day

15th December

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती
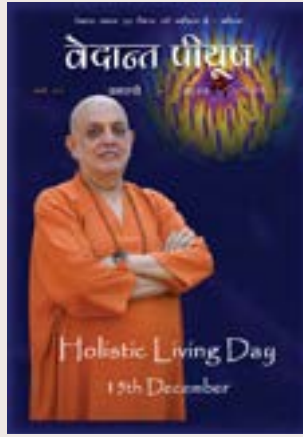
प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

विषय सूचि

जनवरी 2025

एवमात्मारणौ ध्यान-मथने सततं कृते।
उदितावगतिर्ज्वाला सर्वाज्ञानेन्धनं दहेत्।।

(श्लोक - ४२)

इस प्रकार आत्मा को अरणी बनाकर ध्यान रूप मंथन किया जाता है, इससे ज्ञानाग्नि उत्पन्न होती है, तथा उसकी प्रचण्ड ज्वाला समस्त अज्ञान इन्धन को जलाकर भस्म कर देती है।

सन्देश
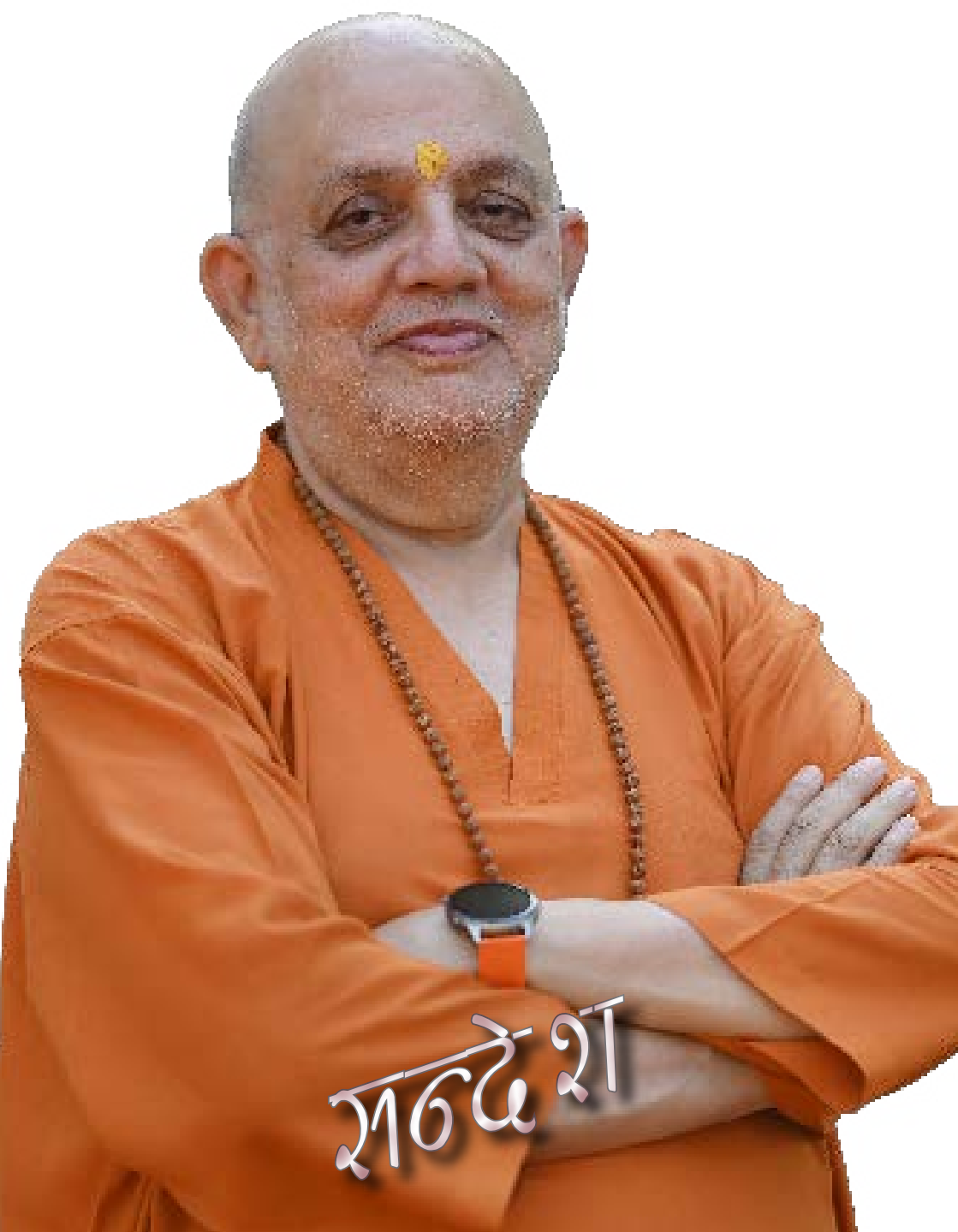
पंचक्लेश – १

पांच क्लेश के अंतर्गत सर्व प्रथम क्लेश अविद्या को बताया था। दूसरा क्लेश होता है – अस्मिता। अस्मिता अर्थात् पहचान। हम अपने बारे में जो समझ रखते हैं उसी समझ के आधार पर अपने आपको प्रस्तुत करते हैं, यह हमारी अस्मिता है। इस जगत रूपी नाटकमंच पर आने के उपरान्त हर व्यक्ति की कुछ न कुछ व्यावहारिक पहचान होती है। वह हमारी शारीरिक आकृति से आरम्भ करके समाज में जाति, कुल, वर्ण, आश्रम, देश, धर्म और संस्कृति को आधार बनाकर हुआ करती है। जगत में हमारी व्यवहारिक पहचान यद्यपि आवश्यक है, तथापि उसे एक क्लेश की श्रेणी में रखा गया। क्योंकि अस्मिता क्लेशनिवारक और क्लेशप्रद दोनों हो सकती है।

हमारी अस्मिता जितनी क्षूद्र, संकुचित होती है, उतनी ही क्लेशप्रद और बन्धन का हेतु बनती है। यदि अपनी अस्मिता को समष्टि के अनुरूप रखा तो वह क्लेशनिवारक हो जाती है,

पंचक्लेश – १

और अगर हमने उसे व्यष्टि दृष्टि से रखा तो वह क्लेशप्रद हो जाती है। गलत रखा तो हमारे लिए वह क्लेश का कारण बनती है। पांच क्लेश के अन्तर्गत सर्व प्रथम क्लेश अविद्या को बताया गया था। क्लेशप्रद अस्मिता का मूल कारण अपने पूर्ण स्वरूप का, उससे भी अधिक जीव की उत्पत्ति का अज्ञान है। इसे नहीं जानने के कारण हमने अपनी अस्मिता को ईश्वर की कृपा का सूचक नहीं बल्कि अपनी विशिष्टता समझ लिया। इस अभिमानरूपा अस्मिता के कारण बाकी सब से विलक्षण और अलग-थलग होकर जीने को विवश हो जाते हैं। इसकी वजह से अकेलेपन के घेरे में घुटन का अनुभव करते हैं। इस अस्मिता का प्रभाव हमारे विचार, संकल्प, लक्ष्य, कर्म और सम्बन्ध आदि सब को प्रभावित करता है। अर्जुन के जीवन में शोकादि का हेतु यह झूठी अस्मिता ही थी। अर्जुन ने अपनी संकुचित अस्मिता को धारण कर लिया। जिससे वह स्वयं को मात्र एक पाण्डुपुत्र अर्जुन मानने लगा। इस व्यक्तिगत, व्यक्त धरातलमात्र की एक अस्मिता को धारण करने के उपरान्त अर्जुन अपने कर्तव्य से समन्वय करने में असमर्थ हो गया। वह स्वयं को पाण्डुपुत्र, द्रोण-शिष्य, भीष्मपौत्रादि व्यक्त धरातल की अस्मिता को ही शाश्वत एवं वास्तविक मानने लगा। परिणामस्वरूप अपने धर्म से च्युत होकर कर्तव्य का त्याग करने तत्पर हो गया। अर्जुन इससे अधिक व्यापक अस्मिता अर्थात् धर्म के प्रतिनिधि ात्व की अस्मिता को मोहवश विस्मृत कर गया।

पंचक्लेश – १

जिसका परिणाम धर्म से च्युति, परधर्म का पालन करना है। धर्म के प्रतिनिधित्व की अस्मिता उसे अन्ततः अन्तर्मुख करके अध्यात्मयात्रा का मार्ग प्रशस्त कर सकती थी। उसके बजाय वह शोकमोह की गर्त में डूब गया। जो उपाधि आशीर्वाद और कृपा का सूचक होती है, वह ही अर्जुन की तरह ही अज्ञानी व्यक्ति के लिए बहुत बड़ी पीड़ा का कारण बन जाती है। अतः अस्मिता को बहुत सोच-समझ के बनाना चाहिए।

इन क्लेश से पूर्णतया मुक्ति पाने के लिए शास्त्र की दृष्टि के अनुरूप अपनी अस्मिता को सतत बनाए रखना चाहिए। यह अस्मिता ज्ञान के पूर्व शास्त्र-गुरु के प्रति श्रद्धा के कारण ध
ारण करी जा सकती है। आरम्भ में ईश्वर की कृपा के पात्र होने का व अपनी पूर्णस्वरूपता की श्रद्धा से युक्त होकर जीना आरम्भ कर सकते हैं। यद्यपि हम एक संकुचित जीवभाव के ध
ारातल पर ही जी रहे है। तथापि यह अस्मिता हमें संकुचिता व दीनता से मुक्त करती है। यदि अस्मिता सीमित है, तो प्रत्येक कर्म दीनता से प्रेरित अहं की संतुष्टि के लिए होते है, जिसके गर्भ में दीन और क्षुद्र व्यक्ति विद्यमान है, उनके प्रयास कभी भी मन में धन्यता नहीं लाता। यदि हमने अपनी अस्मिता धन्यता और पूर्णता की रखी है, तो समस्त कार्य धन्यता एवं पूर्णता की अभिव्यक्ति रूप सुन्दर और दिव्य होते हैं। जिससे स्वयं भी प्रसन्न और

संतुष्ट होते है, तथा अन्य के हृदय को भी प्रेम और खुशी से भर पाते हैं। हमारी अस्मिता जितनी उदात्त और व्यापक होती है, उतनी हद तक सुखदायी होती है। समस्त शास्त्र हमें अपनी पूर्णस्वरूपता में जगाना चाहते हैं, अतः इस ज्ञान के पूर्व ऐसी कल्याणकारी अस्मिता को धारण करने हेतु उपाय भी देते हैं।

आज जब अपने आपको क्षुद्र और सीमित मानकर जी रहे हैं, तो उस धरातल पर शास्त्र हमें एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं कि हम एक क्षुद्र जीवमात्र नहीं हैं, किन्तु इस दिव्य जगत् के सृष्टा महान ईश्वर के अंशरूप है। ऐसी अस्मिता से युक्त व्यक्ति औपाधिक विशेषताओं से अवगत है किन्तु उसमें अपनी विशेषता के स्थान पर प्रभु की कृपा देखता है कि इस सुंदर सृष्टि से लेकर हमारा होनामात्र सब उन्हींका कृपाप्रसाद है। अतः प्रत्येक कर्म के द्वारा स्वयं को जगत की सेवा, उनकी प्रसन्नता हेतु प्रभु की सेवा में समर्पित करता है, तथा प्राप्त कर्मफल में पूरे ब्रह्माण्ड़ का योगदान देखकर ब्रह्माण्ड के नियन्ता के प्रति शरणागत होने लगता है। उस प्रक्रिया में अहं की संतुष्टि नहीं, किन्तु विनम्र होकर अहं का ह्रास होता जाता है। किसी महान के साथ जुड़े होने के कारण बड़प्पन का एहसास होता

है। इस प्रकार की अस्मिता सात्विक, धर्ममय और कल्याणकारी है। इसमें व्यक्ति अनेकता में एकता के सूत्र को देखते हुए व्यापक और उदात्तदृष्टि से युक्त होता है। जैसे जैसे अपनी सीमित अस्मिता से बाहर निकलकर व्यापक होते जाते हैं, वैसे वैसे क्लेशों से मुक्ति होती है। ऐसी अस्मिता से युक्त व्यक्ति कार्य–अकार्य, धर्म–अधर्म के बारे में विवेक कर पाता है। वह विनम्रता से युक्त अध्यात्म का जिज्ञासु बन जाता है। अन्ततः गुरु के श्रीचरणों में बैठकर स्वस्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके वास्तविक अस्मिता पूर्णस्वरूपता को धारण कर लेता है। इस प्रकार इस अस्मिता रूपी क्लेश को आशीर्वाद रूप बनाया जा सकता है।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्व परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्याङ्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

देहेन्द्रियादयो भावा
हानादिव्यापृतिक्षमाः।
यस्य सन्निधि मात्रेण
सोऽहमित्यवधारय॥

जिसकी सन्निधि से देह-इन्द्रिय आदि अपने-अपने ग्रहण-त्याग आदि विषय में समर्थ होती है - वह मैं हूं, ऐसा तुम निश्चय करो।

वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक में आचार्य ने बताया कि यह देहेन्द्रियादि संघात हम नहीं है। अतः उसके विकारादि भी हम में नहीं है। उसके लिए पहली युक्ति बताई कि यह संघात दृश्य है और हम उसके द्रष्टा है। अतः उसके धर्मों से अलिप्त है। दूसरी युक्ति बताई कि यह नश्वर और जड़ है। हम चेतन सत्तारूप उसके प्रकाशक सदैव विराजमान है।

यदि देहादि संघात दृश्य होने से जड़ है तो यह स्वाभाविक प्रश्न होता है कि जड़ वस्तु कभी भी स्वतः चालित नहीं होती है; न उसमें स्वतः कर्म का सामर्थ्य होता है। फिर भी देहादि संघात अत्यन्त जीवन्त, क्रियाशील प्रतीत होता है। यदि संघात जड़ है तो उसमें यह सब सम्भव कैसे होता है? इस प्रश्न का उत्तर इस श्लोक में दिया जा रहा है।

आचार्य बता रहे हैं कि देहेन्द्रियादयो भावाः...। देह, इन्द्रियां,

मन, बुद्धि आदि रूप समस्त उपाधि अथवा इन सबसे युक्त देहेन्द्रिय संघात जड़ प्रकृति के तीन गुणों का बना हुआ है। यह स्वाभाविक है कि जड़ वस्तु स्वतः कुछ भी कार्य करने में सक्षम नहीं है। किन्तु हम उसके जन्म से ही देखते हैं कि उनके वृद्धि, क्षय होता है। जन्म से मृत्यु के मध्य में सतत अनेकों विकारो की अनुभूति होती है। इतना ही नहीं, उसके द्वारा विविध क्रियाकलाप भी हो रहे है। जैसे ज्ञानेन्द्रियां शब्दादि ग्रहण करने में सक्षम होती है। कर्मेन्द्रियां बाह्य जगत के साथ व्यवहार करती है। मन में सतत संकल्प-विकल्प की तथा विविध प्रकार की भावनात्मक वृत्तियों का अनुभव होता है। बुद्धि भी सतत विचार करती है, अनेकों निश्चय करती है और अन्ततः इन शरीर, इन्द्रियां, मनादि के द्वारा उसका क्रियान्वयन होता है। इस प्रकार यह उपाधियां जड़ होने के बावजूद हानादिव्यापृति क्षमाः। ग्रहण-त्यागादिरूप व्यवहार करने में सक्षम होते है। इसी पंचमहाभूत, जड़ तत्त्वों

से बने हुए घट आदि स्वतः कुछ भी करने में सक्षम नही होते है। किन्तु उसे बनानेवाला, उसमें जल–आदान आदि क्रिया करनेवाला उससे पृथक् कोई चेतन व्यक्ति/कुम्हार होता है। वैसे ही हमारा देह आदि भी त्रिगुणात्मिका माया से निर्मित पंचभूतात्मक, जड़ है। तथापि उसमें हो रहा व्यवहार मात्र चेतना अर्थात् 'मैं' की सन्निधि में होता है। मैं एक जीवन्त चेतन तत्त्व है, जो स्वतः नहीं कुछ करता है और नहीं करवाता है। किन्तु उसकी सन्निधि मात्र से यह सब करणादि अपने अपने व्यवहार करने में सक्षम होते है।

जिस प्रकिार बिजली स्वतः न प्रकाश देती है, न हवा देती है, न ठण्ड उत्पन्न करती है और न ही गर्मी। किन्तु उसकी सन्निधि में यह समस्त करण अपने औपाधिक धर्मानुसार कार्य करने में सक्षम हाते है। ठीक वैसे ही निश्चय करना चाहिए कि वस्तुतः मैं कुछ भी न करता है और करवाता है। वैसे ही अपने बारे में जानना चाहिए।

गीता और मानवजीवन
पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी
-: २० :-
समर्पण – यज्ञ

गीता और मानवजीवन

गीता के तीसरे अध्याय में भगवान बताते हैं;

'सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वम् एष वोऽस्त्विष्ट कामधुक्।।'

ब्रह्माजी ने जब सृष्टि का सृजन किया तब मनुष्य के सृजन के साथ-साथ उन्होंने यज्ञ का सृजन किया। और इस यज्ञ का उपदेश करते हुए मनुष्य को बताया कि, 'इस यज्ञ के द्वारा तुम सर्व उन्नत्ति को प्राप्त करो। तुम जो कुछ चाहोगे उन सबको प्रदान करनेवाला यह यज्ञ है।'

यज्ञ के पीछे बहुत सुन्दर सिद्धान्त है। सामान्यतः यज्ञ की ऐसी समझ है कि एक यज्ञवेदी बनाई जाती है, उसमें अग्नि को प्रज्जवलित करके आहुति दी जाती है। किन्तु भगवान् श्रीकृष्ण गीता में यज्ञ की बहुत ही व्यापक व्याख्या देते हैं। 'यज्ञो वै विष्णुः'। यज्ञ अर्थात् विष्णु, ईश्वर, परमात्मा। और इस लिए परमात्मा को अर्पण करने की भावना से जो कर्म किया जाता है, वह यज्ञ कहा जाता है। हम प्रचलित अर्थ में जिसे यज्ञ कहते हैं, उसमें कुछ त्याग किया जाता है। आहुति का अर्थ अर्पण करना है। इसलिए कर्म के पीछे समर्पण

की भावना हो, परोपकार की भावना, त्याग की भावना हो, ऐसे कर्म का नाम यज्ञ है।

यदि मीमांसकों से पूछे कि यज्ञ किसे कहा जाता है, तो वे 'देवताओं को उद्देशित किए गए त्याग को ही यज्ञ बताते हैं। बाकी तो सब याग की तैयारियां है। वेदी स्थली, अग्नि को प्रकट करना, अन्य सब द्रव्य को इकठ्ठा करना, मंत्रोच्चार करना यह तो यज्ञ के आसपास की तैयारियां है। परन्तु यज्ञ को द्रव्य को अग्नि में होमने की क्रिया का नाम है। यह द्रव्य होम की, द्रव्य-त्याग की क्रिया के पीछे समर्पण की, त्याग की भावना रहती है। इसलिए ब्रह्माजी ने मनुष्य को सृजन करके, उन्हें यह आदेश किया कि 'जीवन में समर्पण की भावना से कर्म करों।'

'देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।'

इस यज्ञ के द्वारा तुम देवताओं को सन्तुष्ट करो और देवता भी तुम्हें सन्तुष्ट करेंगे। इस प्रकार परस्पर को सन्तुष्ट करते हुए तुम परं श्रेय को प्राप्त करो। देवता अर्थात् जगत का संचालन और नियन्त्रण करनेवाले मूलभूत घटक, जैसे कि अग्नि, वायु,

गीता और मानवजीवन

जल, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्र, इन्द्र, वरुण इत्यादि। ये देवता जिस प्रकार से कार्य कर रहे हैं, उससे शिक्षा लेकर इस तरह अपने जीवन में कार्य करना चाहिए। वे सब समर्पण कर रहे है। सूर्य परोपकार के लिए प्रकाशित होता है। मात्र नमस्कार करने से भी सूर्य प्रसन्न होता है। और अपनी आंखों की रोशनी बढ़ाता है। सूर्य का प्रकाश न हो तो आंखों का प्रकाश भी निरर्थक हो जाता है, कुछ देख ही नहीं सकते। किन्तु सूर्य कदापि यह नहीं कहता है कि 'इस व्यक्ति ने मुझे नमस्कार नहीं किया है, अतः उसके घर में प्रकाश नहीं दूंगा।' बगैर किसी राग-द्वेष के सूर्य समान रूप से सर्वत्र प्रकाश फैलाता है। प्राणीमात्र का जीवन सूर्य के प्रकाश पर आश्रित है। इस प्रकार सूर्य सतत सेवा करता है। पृथ्वी भी सेवा करती है। सब का भार सहन करती हैं, कितना भी तिरस्कार करे तो भी माता की तरह सतत हमारा पोषण करती है। वायु सर्व जीवन का पालन करता है, जीवन को सम्भव बनाता है। जल सब की तृष्णा मिटाता है। चन्द्र शीतलता प्रदान करने के द्वारा औषधियों में रस उत्पन्न करता है। बादल भी सतत सेवा करते है, समर्पण करते है। जगत में दृष्टिपात करे तो यह दीखता है कि एक वैश्विक यज्ञ चल रहा है और सृष्टि

के सब तत्त्व इस यज्ञ में भाग ले रहे हैं। कोई भी निष्क्रिय नहीं है। बगैर थके हुए सतत कार्य कर रहे हैं।

कोई कहेगा कि यह तो सब जड़ तत्त्व है। किन्तु नियमित रूप से कार्य कर रहे है, उसे जड़ कैसे कहा जा सकता है? जगत का निरीक्षण करे तो यह दीखता है कि कोई बुद्धिपूर्वक का तत्त्व है, चेतन तत्त्व है जो सब का संचालन कर रहा होगा। यह ही चेतनतत्त्व ब्रह्माण्ड में विविध रूप से यह सर्व कार्य कर रहा है।

मनुष्य भी इसी चेतनतत्त्व की एक अभिव्यक्ति है। उसे भी अपने कर्म द्वारा इस समर्पण यज्ञ में योगदान देना है।

— ५५ —
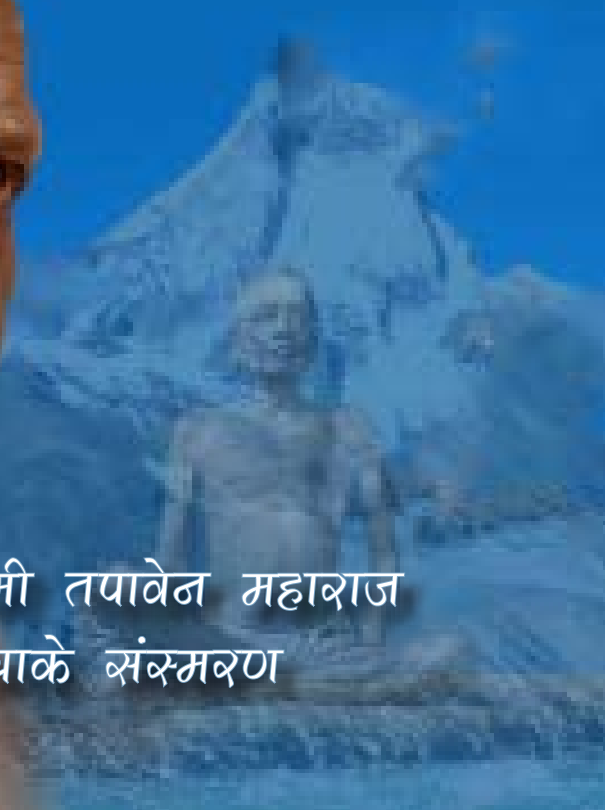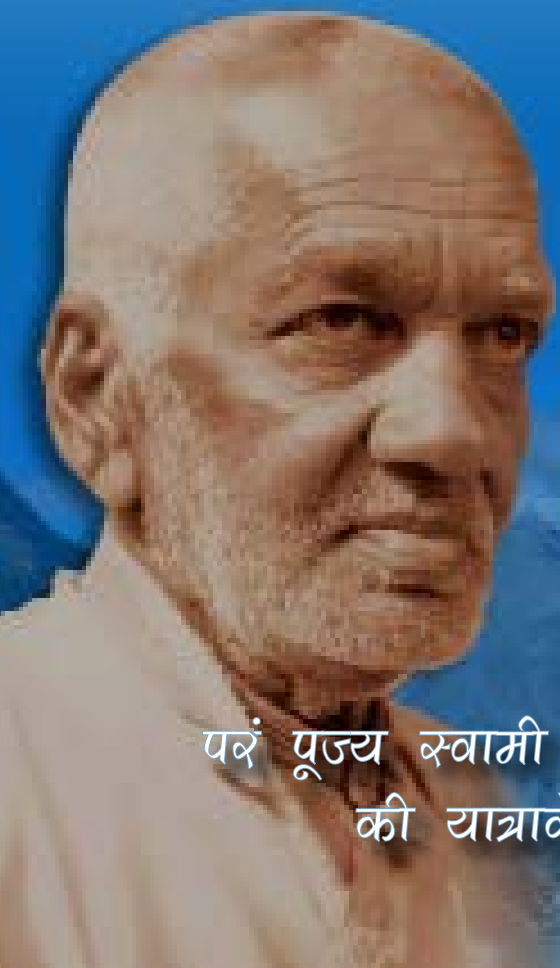
केदारनाथ

परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

त्रियुगीनारायण से थोडी दूर नीचे उतर कर, गंगा के किनारे से एक मार्ग उपर केदारनाथ की ओर जाता है। इस मार्ग की सुन्दरता तथा महिमा भी अनुपम हैं। जलधाराएं पाषाणसमूह से टकरा टकरा कर मानों यहां की शोभा का वर्णन उच्च स्वर से श्रोताओं को सुना रही हैं। उस महान् प्रभु की महिमा को साधारण लोग नहीं जान सकते। वह सौन्दर्य मूर्ति, सर्वशक्तिमान भगवान सव्रत्र है। पत्थर, मिट्‌टी, जल और वन सब में प्रकाशमान है। फिर भी अहंकारी व्यक्ति उस सर्वत्र स्फुट प्रकाशमान भगवान को देखकर आनन्द भोगने में समर्थ नहीं होते। बुद्धि, इन्द्रिय तथा देह मे अहं का अभिमान ही अहंकार है। अहंकार में डूबते तडपते एक पापात्मा की अशुद्ध बुद्धि में ईश्वर का दर्शन नितान्त असम्भव है।

मंदाकिनी के रमणीय तट पर 'गौरी कुण्ड' नामक एक और उल्लेखनीय स्थान है। यह कुण्ड गंधकमय पाषाणों से निकलने तक जल से परिपूर्ण है। इस अति शीतल प्रदेश में तप्त जलाशयों का मिल जाना यात्रियों के लिए अति सुखद है। बडे बूढ़ों का कहना है कि जब भगवत्पाद शंकराचार्य अपने शिष्यों के साथ पहले पहल केदारनाथ पहुंचे थे, तो उन्होंने देखा कि शीत की अधिकता के कारण उनके शिष्यों को स्नानादि करने में कष्ट होता है। उनके कष्टों को दूर करने के लिए उन्होंने अपनी संकल्प शक्ति से ये कुण्ड बनाये थे। विद्यारण्य स्वामीजी की लिखी जीवनी 'शांकर दिग्विजय' नामक ग्रंथ में भी इस घटना का उल्लेख मिलता है।

लीजिए, अब हम केदारनाथ पहुंच गये है। भक्तों के आनन्द की कोई सीमा नहीं है। 'केदारनाथ की जय' की पुण्य ध्वनि से आकाशमण्डल मुखरित हो उठा। केवल दृश्य दर्शन के लिए आये रसिकों का आनन्द भी उच्च सीमा तक पहुंच गया है। भक्तजन निःशंक मंदाकिनी में गोता लगाकर, जल पात्र में जल लिये तथा कुछ पुण्य पुष्पों को पाकर पूजा के लिए 'हर हर महादेव' के शब्द घोषों के साथ मंदिर मे प्रवेश कर रहे हैं। यात्री

दूर दूर से अनेक कष्टों को सहकर यहां पहुंचे है। वे केदारनाथ की मूर्ति के दर्शनोत्सुक हैं। मंदिर के दरवाजे पर स्त्री पुरुष छोटे बडे सबकी भीड़ लगी हुई है। अहो विचित्र! प्रेम संसार भी कितना महिमामय है। प्रेम की मधुरिमा के समान उसकी प्रेरणा -शक्ति भी बलवती होती है। अलौकिक कल्पनाशक्ति के लोक वन्दनीय वाल्मीकि, व्यास, कालीदास आदि साहित्यकारों ने इस महाविचित्र प्रेम के एक एक कण को ही अपने स्थायी ग्रंथों मे स्थान दिया है। प्रेम ही भक्ति है। प्रेम और भक्ति भिन्न पदार्थ नहीं है। प्रेम के अनेक रूप है। अपने से उत्कृष्ट वस्तुओं के प्रति प्रेम का नाम भक्ति है। निकृष्ट जीवों के प्रति प्रेम का नाम दया है, और समान जीवों के प्रति प्रेम स्नेह कहलाता है। देवता और ईश्वर के प्रति चित्त को पिघला देनेवाला अनुरागविशेष ही तो भक्ति है। ईश्वर चरणों में शुद्ध भक्ति पैदा होने से ही मनुष्य जन्म कृतार्थ एवं चरितार्थ होता है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)
श्री कौशल्या चरित्र
– ०४ –
प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ़ सनेहू।।

श्री कौशल्या चरित्र

महाराज दशरथ महर्षि विश्वामित्र की मांग को सुनकर व्याकुल हो जाते हैं। उनकी वात्सल्य भावना उमड़ आती है। वे यह कहे बिना नहीं रह पाते हैं कि इस मांग में अनौचित्य है। 'कहां कठोर हिंसक राक्षस और कहां मेरे सुकुमार पुत्र'। वह तो गुरु वशिष्ठ थे जिन्होंने महाराज को इस दान के लिए प्रेरित किया। किन्तु कौशल्या अम्बा से आदेश मिलने में एक क्षण का भी विलम्ब नहीं होता।

एक क्षण के लिए भी उन्होंने यह नहीं सोचा कि यह उनके पुत्र के साथ अन्याय हो रहा है। या कैकेयी के पुत्र को साथ जाने का आदेश होना चाहिए। वे तो इसीसे सन्तुष्ट थी कि रामभद्र को मुनियों की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, और यहां वात्सल्य-भावना की तृप्ति के लिए भरत और शत्रुघ्न विद्यमान रहेंगे। ऐसी उदात्त हृदयवाली मां यदि राज्याभिषेक को भी सहज भाव से ले रही हो तो इसमें कोई आश्चर्य न था। किन्तु उनका सहज भाव ही कुटिल मन्थरा के लिए अपने मत के समर्थन में युक्ति बन बैठा। मन्थरा के वाक्य में यह ध्वनि निकल रही थी कि सर्वदा भरत के प्रति अधिक ममत्व का प्रदर्शन करनेवाली कौशल्या को आज क्या हो गया है जो राज्याभिषेक के समाचार से फूली-फूली फिर रही हैं। क्यों नहीं

उन्होंने महाराज से यह अनुरोध किया कि राज्य तो भरत को ही प्राप्त होना चाहिए। सत्य तो यह है कि वे बड़ी कूटनीतिज्ञ हैं, वे अपने पुत्र का राज्याभिषेक कराने का संकल्प लेकर ही योजनाबद्ध रीति से कार्य कर रही थी। उन्होंने अपने बाह्य व्यवहार से सब का विश्वास जीत लिया। अवसर मिलते ही भरत ननिहाल भेज दिए गए। इस तरह के कुतर्कों से कैकेयी भले ही प्रभावित हुई हों पर कौशल्या अम्बा ने बाद में भी अपने प्रत्येक व्यवहार से यह सिद्ध कर दिया कि उनका उदात्त हृदय इन क्षुद्र भावनाओं से कितना उपर उठा हुआ था। यद्यपि वे राज्याभिषेक की कल्पना से आनन्दविभोर हो उठी थीं किन्तु प्रतिकूल परिस्थिति में उनका धैर्य दर्शनीय है।

सारे षड्यन्त्र से अनभिज्ञ वे उस क्षण की प्रतीक्षा में थी जब प्रजा सहित उनकी आकांक्षा साकार रूप ग्रहण करेगी। अतः राम के आगमन पर उनकी वाणी से जो बोल निकलते हैं, उनमें व्यग्रता की पराकाष्ठा थी। यद्यपि उन क्षणों में वे अपने वात्सल्यरस से ओत-प्रोत मातृहृदय का परिचय देती हैं। उन्हें यह भय सताता है कि कहीं राज्याभिषेक की प्रक्रिया में इतना विलम्ब न हो जाए कि उनका लाड़ला पुत्र भूखा रह जाय। अतः वे चाहती हैं कि पिता के सन्निकट जाने के पहले रामभद्र कुछ

मधुर फल अवश्य खा लें। पर वात्सल्य की इस वाणी के साथ ही कर्तव्य के स्वर भी मिले हुए हैं। इसलिए वे 'फल-खाहू' के पहले 'नहाहू' का आदेश देना नहीं भूलती।

रामभद्र के द्वारा इस वात्सल्य के उत्तर में उन्हें जो समाचार प्राप्त होता है, उससे उनके हृदय पर कितना आघात लगा होगा इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। गोस्वामीजी अनेकों उपमाओं के माध्यम से उस दुःख की कल्पना को साकार करने का प्रयास करते हैं।

कथा / प्रसंग

ईश्वर का अस्तित्व

ईश्वर का अस्तित्व

एक युवा लड़का अपने पिता से बोलता है कि भगवान इस जगत् में है ही नहीं। यदि होते तो दिखने चाहिए। पिता ने उसको बहुत प्रकार से समझाने की कोशिश करी, किन्तु उसे इस बात पर लेशमात्र भी भरोसा नहीं हो पाया। पिताजी ने समझाने की व्यर्थ कोशिशों को छोड़ दिया।

जब वह बाहर गया तो पिता ने उसके कमरें में एक बड़े केनवास को लेकर उस पर सुन्दर चित्र बनाया तथा पास में ही सब रंग की बोतलें, ब्रश पानी आदि छोड़ दिया। जब लड़का वापिस आया तो उसने सुन्दर चित्र को देखा, तुरन्त ही अपने पिता से प्रश्न किया कि, 'अरे! इतना सुन्दर चित्र किसने बनाया? पिताजी ने बोला कि, 'किसी ने नहीं बनाया! अपने आप ही बन गया।' लड़का बड़े आश्चर्य से पिता को देखने लगा। वह अपने पिता की बात को समझ नहीं पा रहा था।

ईश्वर का अस्तित्व

उसने पिताजी से बोला कि 'ऐसा कभी सम्भव ही नहीं हो सकता कि अपने आप कुछ हो सके !' पिताजी ने कहा, 'देखो बेटा! यह ब्रश यहाँ से उठा, पानी में गीला हुआ और रंग की बोतल में से रंग को लेकर फिर उठा और केनवास पर जाकर रंग भरकर वापिस आया।' लड़का हँसने लगा कि जगत् में कोई भी वस्तु अपने आप हो ही नहीं सकती है। यह सुनकर पिताजी बोले कि, ''वाह बेटा! यह छोटा सा चित्र अपने आप नहीं बन सकता है, और तब भी इतना बड़ा जगत् अपने आप बन जाता है।'' लड़के को अपनी भूल समझ में आ गई, और जगत्सृष्टा परमात्मा के अस्तित्व के प्रति श्रद्धा से युक्त हो गया। इतने मात्र से भी वह धन्यता का अनुभव करने लगा।

परमात्मा के अस्तित्व का निश्चय अपने ज्ञान रूपी चक्षु से करना चाहिए, न कि अपने मांस चक्षुओं से। आंखों का प्रयोजन तो रूप और रंग की दुनियां दिखाना है, न कि उनके बनाने वाले को।

जहां पर भी कोई कार्य है वहां कारण होना ही चाहिए। ईश्वर जगत्‌रूपी कार्य के मूल कारण हैं, अतः उनके अस्तित्व में कभी सन्देह नहीं करना चाहिए। जगत् का होना ही ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Gita Jayanti Celebrations
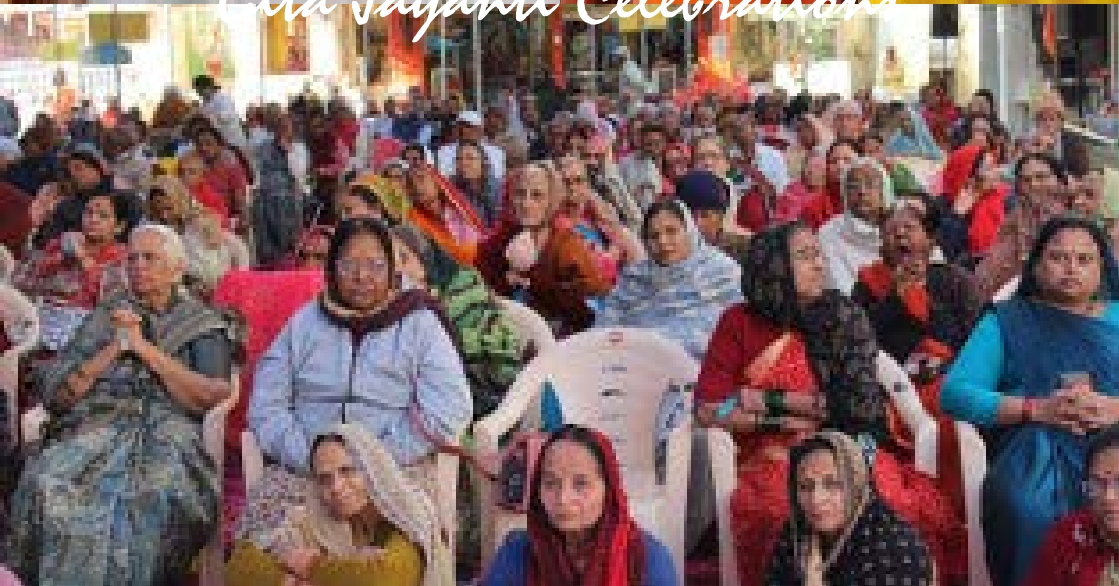
आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

At the Lotus Feet of P.P. Guruji

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार
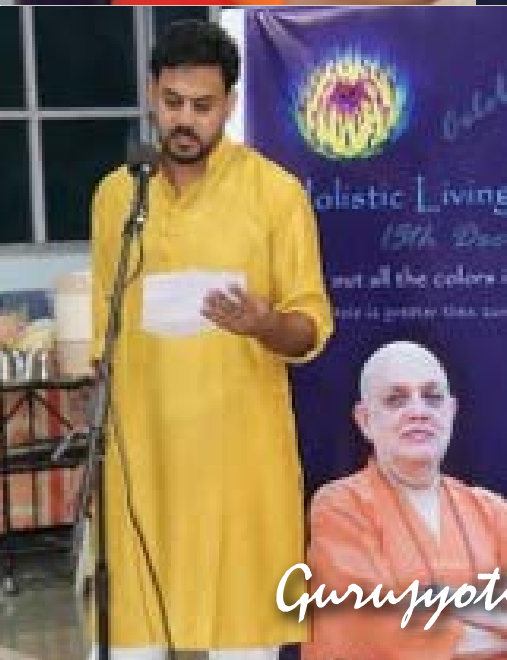
'Karmayoga se Karmotkarsha'

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

H'ble Guests on the occasion

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Conclusion of Gita Gyan Yagya For Students from Russia & Georgia

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Abhisheka by Sri Siddharth Arora
Oxford UK

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

गीता ज्ञान शिविर

आवासीय शिविर

दि. 21 से 26 फरवरी 2025

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

अध्याय - 5 (ज्ञान कर्म संन्यास योग)

एवं ध्यान, श्लोकपाठ, प्रश्नोत्तर, भजन

एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

एवं अन्य आश्रम महात्मागण

महाशिवरात्री उत्सव

एवं शिविर समापन

26 फरवरी 2025

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी एवं आश्रम महात्मागण

आश्रम / मिशन समाचार

गीता श्लोकपाठ

प्रति रविचार, सायं 4 बजे से

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

अध्याय - 12 (भक्ति योग)

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(☝ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (☞ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Jan '25

Vedanta Piyush - Dec '24